जैन धर्म की प्राचीन धरोहर (गुफाएं)

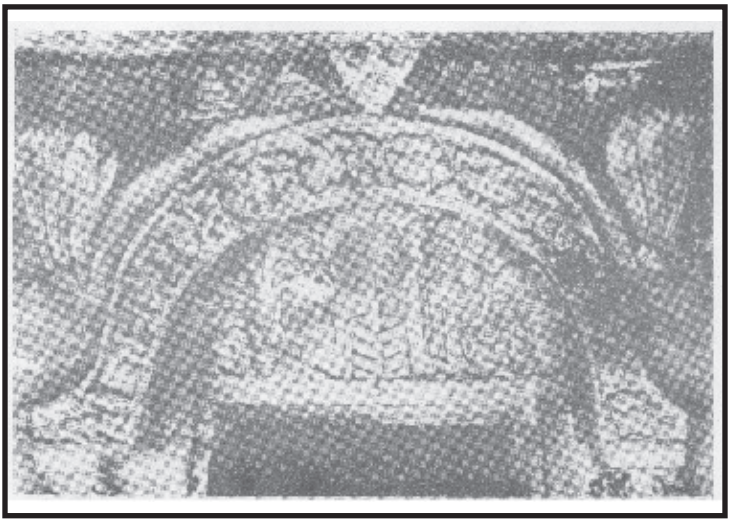

खण्डगिरि (उड़ीसा), अनन्त गुंफा , चैत्यवृक्ष– पूजा

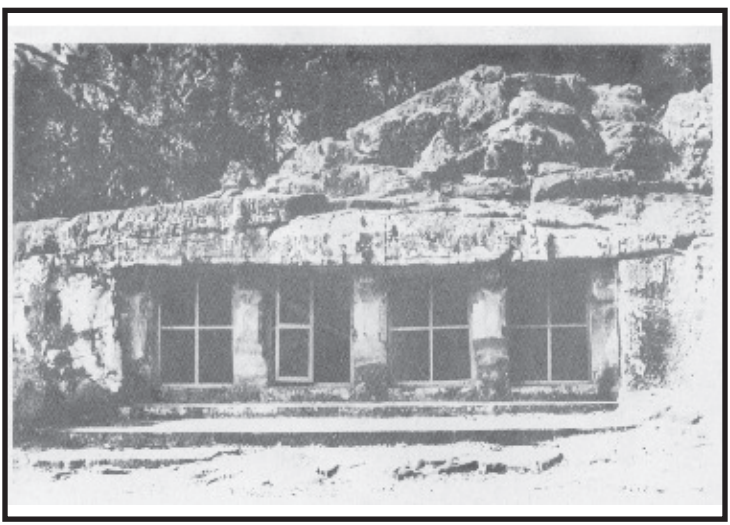

खण्डगिरि (उड़ीसा), अनन्त गुंफा , सम्मुखीन दृश्य

जैन धर्म की प्राचीन धरोहर (गुफाएं)

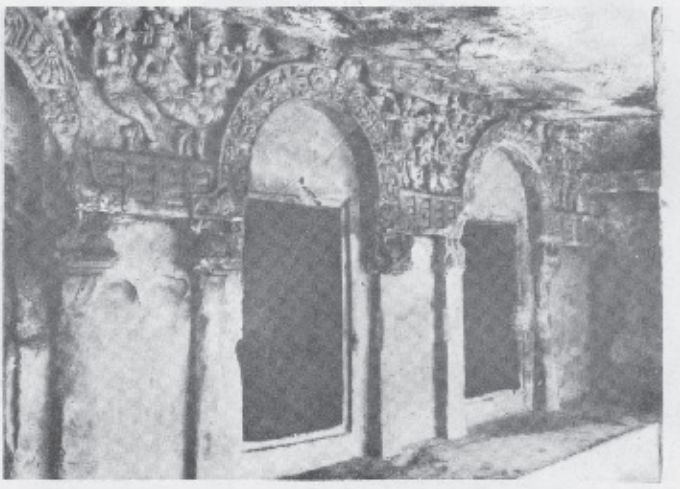

उदयगिरि (उड़ीसा), रानी गुंफा (संख्या 1), निचली मंजिल,
गर्भशाला के मुखपट्ट पर अंकित दृश्य

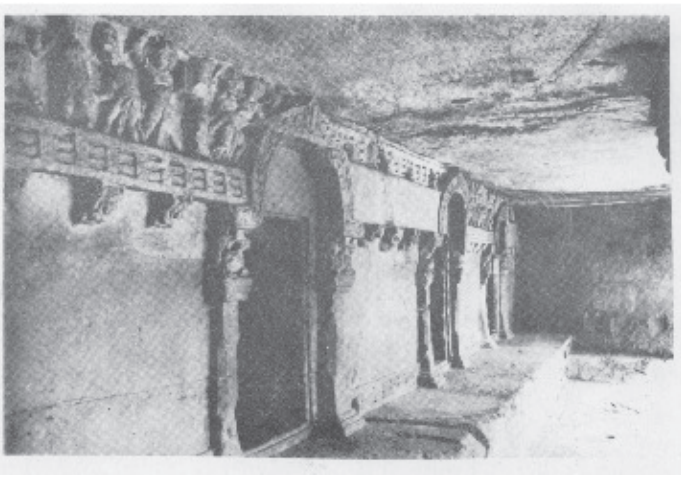

उदयगिरि (उड़ीसा), गणेश गुंफा
गर्भशाला के मुखपट्ट पर अंकित स्त्री–अपहरण का दृश्य

जैन धर्म की प्राचीन धरोहर (गुफाएं)

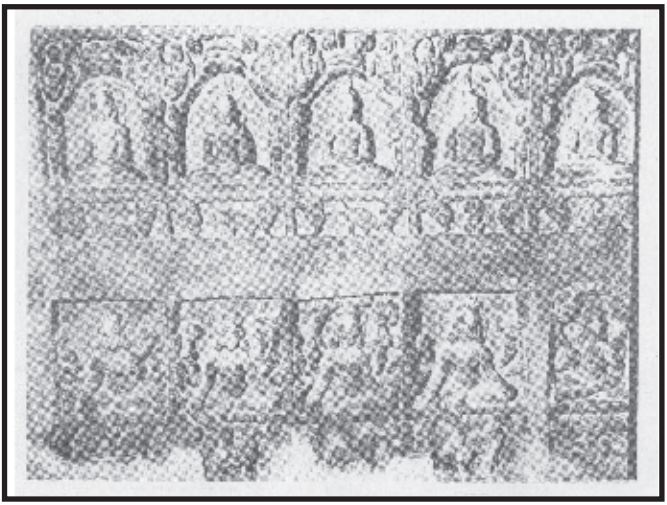

खण्डगिरि (उड़ीसा), बारभुजी गुंफा ,
तीर्थंकर एवं उनकी शासनदेवीयाँ

खण्डगिरि (उड़ीसा), अनन्त गुंफा , गजलक्ष्मी

जैन धर्म की प्राचीन धरोहर (गुफाएं)

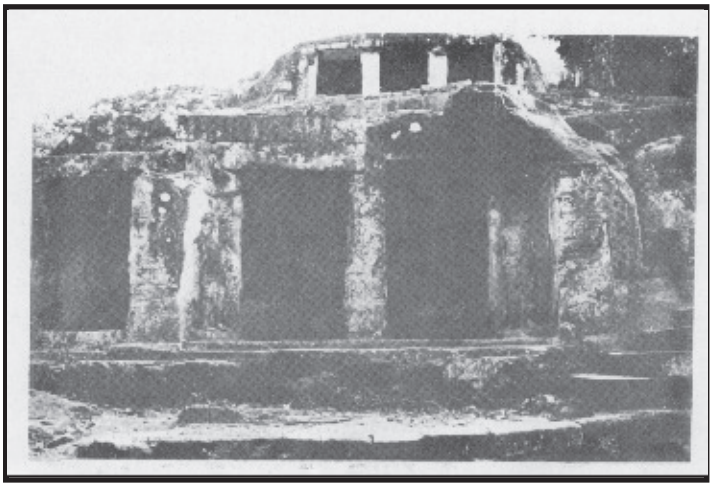

खण्डगिरि (उड़ीसा), तातोवागुंफा , सम्मुखीन दृश्य

उदयगिरि (उड़ीसा), रानीगुंफा , बाह्य दृश्य

जैन धर्म की प्राचीन धरोहर (गुफाएं)

ऐहोली, जैन गुफा, मुखमण्डप, पद्मावती
एवं धरणेन्द्र के साथ पार्श्वनाथ

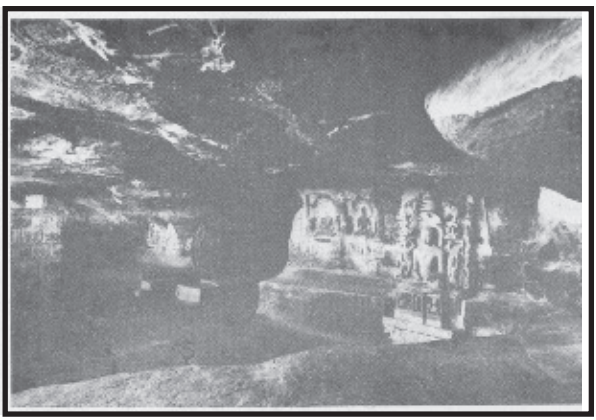

उदयगिरि (म.प्र.), गुफा संख्या 20, आन्तरिक दृश्य

जैन धर्म की प्राचीन धरोहर (गुफाएं)

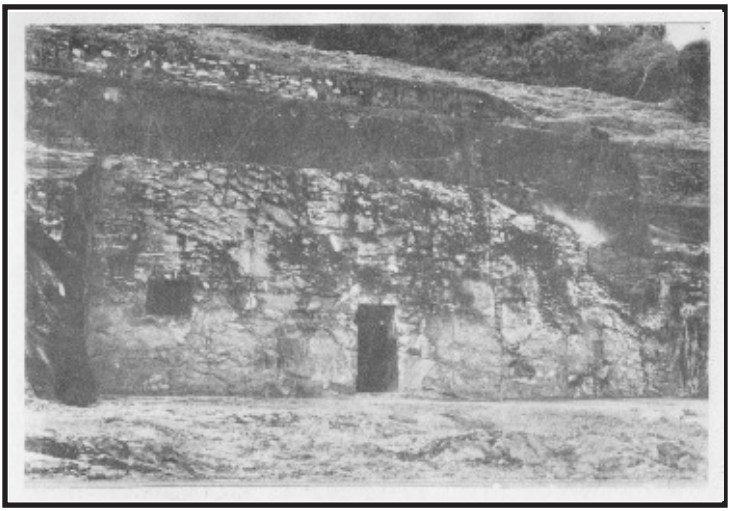

राजगिर, सोनभण्डार गुफा, सम्मुखीन दृश्य

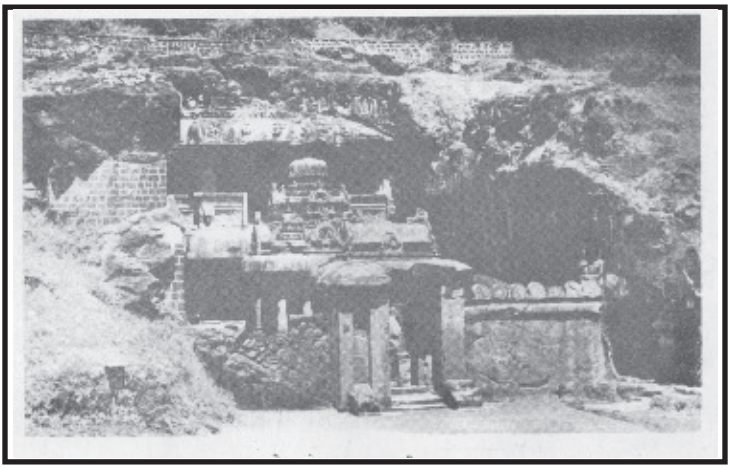

एलोरा, इन्द्रसभा,सम्मुखीन दृश्य

जैन धर्म की प्राचीन धरोहर (गुफाएं)

एलोरा, इन्द्रसभा, प्रांगण, सर्वतोभद्र विमान

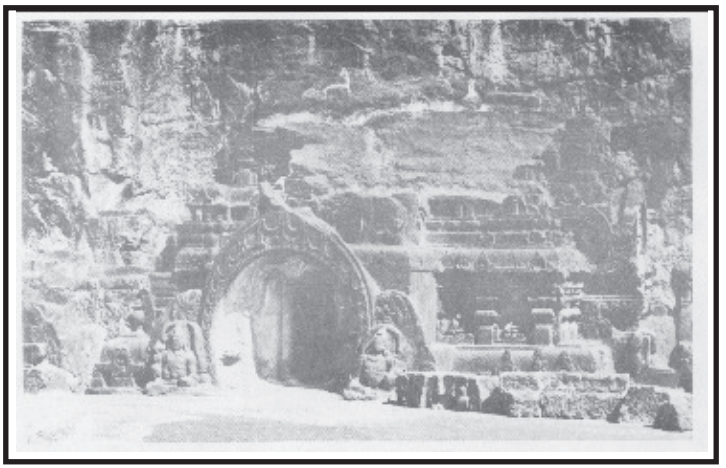

एलोरा, छोटा कैलाश (संख्या 30) सम्मुखीन दृश्य

जैन धर्म की प्राचीन धरोहर (गुफाएं)

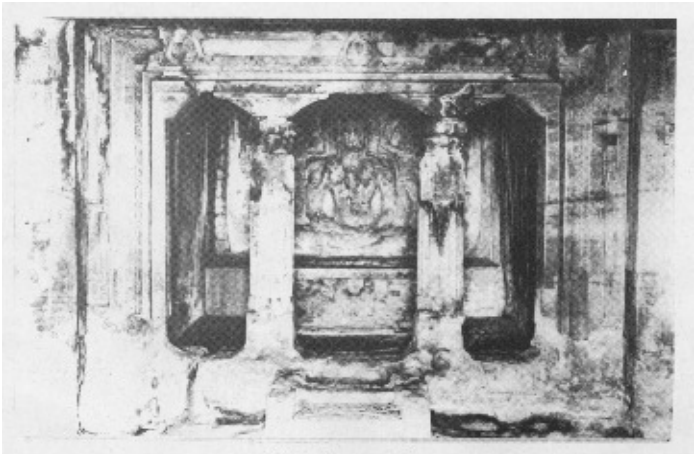

ऐलारा, जैन गुफा, गर्भगृह

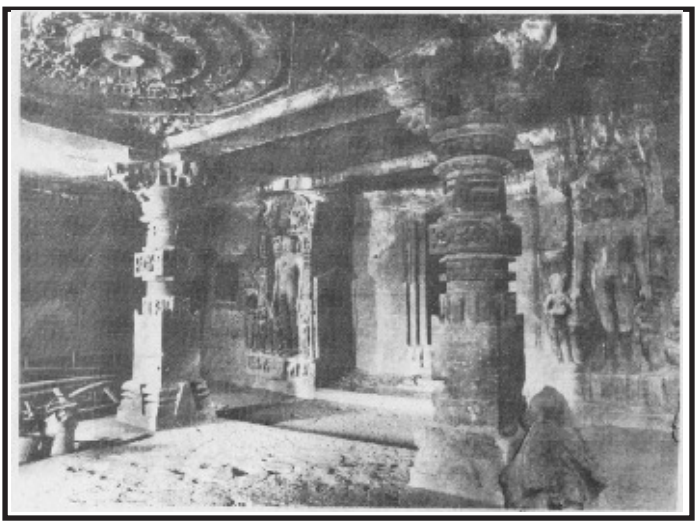

अंकाई, गुफा संख्या 3, आंतरिक मण्डप

जैन धर्म की प्राचीन धरोहर (गुफाएं)

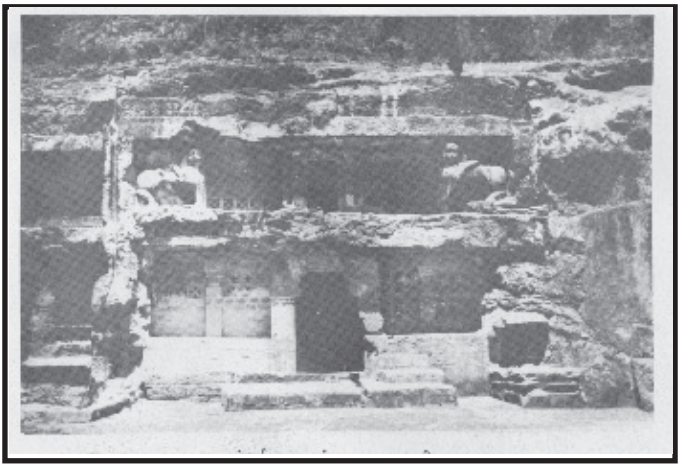

अंकाई, गुफा संख्या 2,सम्मुखीन दृश्य

अंकाई, गुफा संख्या 1, मुखमण्डप, द्वार

प्रभावी पार्श्वनाथ भगवान का
तीर्थ नांद गिरि

श्री ऋषभदेव भगवान से श्री सुविधिनाथ भगवान तक विश्व में एक ही जैन धर्म था। श्री सुविधिनाथ के शासन व संघ के विच्छेद होने से जैन धर्म को क्षति हुई। इसके बाद श्री महावीर भगवान तक जैन धर्म का उतार–चढ़ाव चलता रहा फिर भी जैन धर्म का प्रभुत्व बना रहा।

प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव से 21 वें तीर्थंकर श्री नमिनाथ तक भले ही इतिहास के पन्नों पर नहीं देखा गया परन्तु दो तीर्थंकरों को छोड़ सभी तीर्थंकरों का नाम किसी न किसी रूप में वेद, उपनिषद्, पुराण, भागवत पुराण आदि ग्रन्थों में मिलता है। इससे यह प्रमाणित है कि जैन धर्म विद्यमान था। इसके अतिरिक्त मोहनजोदड़ों व हड़प्पा संस्कृति 5000 वर्ष प्राचीन है उसके खनन में जैन मूर्ति का मिलना जैन धर्म की विद्यमान होना स्पष्ट होता है।

भारत के किसी भी क्षेत्र में जहां पर आज जैन अनुयायी नहीं है वहां पर खनन करने पर जैन मूर्तियें मिलती है। चाहे वह मेवाड़ का क्षेत्र हो, मथुरा कंकाली टीला , बिहार, उत्तरप्रदेश, उड़ीसा हो।

इनकी भारत में जैन धर्म का व्यापक प्रचार व प्रभाव था। उसी प्रकार दक्षिणी भारत में भी जैन धर्म की ध्वजा लहराती थी। महाराष्ट्र राज्य के पुरातत्व की शोध शिलालेख, दान प्रात्र, ताम्रपत्र के आधार पर निम्न वंश के राजा (शासक) जैन थे और उनके मंत्रीगण भी जैन धर्म के अनुयायी रहे। निम्न वंश के राजा जैनी थे :–

1. राष्ट्रकूट वंश	2. चालुक्य वंश	3. कलचूरीवंश
4. पल्लववंश	5. कदम्ब वंश	6. गंग वंश
7. पाड्य वंश	8. चोल वंश	9. शिलाहार वंश

दक्षिणी भारत में अनेक जगह पर खनन से जैन मूर्तिये मिली है, तथा जैन गुफाएं बनी हुई है जिसमें जैन मूर्तियें स्थापित है। उसमें से एक तीर्थ श्री पार्श्वनाथ भगवान का नानगिरि है।

कोल्हापुर से पूना तक छोटी–बड़ी पहाड़ियों के बीच एक नानगिरि (नान्दगिरि) भी है। पहाड़ी के नामाकरण के बारे में ऐसा कहा जाता है कि नान्दगिरि नंद राजा ने बसाई इसलिए इसको नान्द गिरी कहा जाता है।

दूसरा नाम नानगिरि है, ऐसी मान्यता है कि पहाड़ियों की श्रृंखला में यह छोटी (नानी) है अतः इसको नानगिरि कहा जाता है।

नानगिरि पहाड़ी पर एक कल्याणगढ़ नाम का एक किला हैं। इसके बारे में भी मान्यता है कि राजा भोज से छत्रपति शिवाजी एवं पेशवा तक यह भूमि पुनित रही है। ऐसा कहा जाता है कि शिवाजी के पुत्र सम्भाजी ने आक्रमण कर लूट का धन इसी पहाड़ी की गुफा में छिपाया था।

नानगिरी पूना से सतारा मार्ग पर सतारा चौराहा से 15 किलोमीटर दूर कोरेगांव और कोरेगांव से 10 किलोमीटर दूर नानगिरि ग्राम है नानगिरि पहाड़ी के आधार पर इस ग्राम का नाम नानगिरि कहलाया है।

इसी नानगिरि पहाड़ी पर पार्श्वनाथ का तीर्थ है।

नानगिरि भू–तल से 3366 फीट ऊपर यह तीर्थ स्थापित है। पहाड़ी पर कंटीली झाड़िया – बिना सीढ़िया, उबड़–खाबड़ बिना छाव, बिना पगडंडी के मार्ग को पार कर जाना पड़ता है। पहाड़ी के मध्य में एक पानी का कुण्ड है जहां पर सदैव पानी बहता रहता है। यहां एक गुफा दिखाई देती है। इसके लिए ऐसा कहा जाता है कि इसका दूसरा सिरा पूना के महल तक जाता है।

ऊपरी भाग में किला का मुख्य दरवाजा जिसको झरोखा भी कहा जाता है। इसके लिए ऐसा कहा जाता है कि आक्रमण के समय प्रहरी नीचे की ओर की प्रत्येक गतिविधि का ध्यान रखते थे।

झरोखा में प्रवेश कर भीतर प्रवेश करते है जो अनेक मधुमक्खियों के छत्ते दिखाई देते है, ऐसी मान्यता है कि मूर्ति की असातना होने या अविधि होने पर सदस्यों पर हमला भी करती है।

नीचे की ओर उतरने पर गुफा का द्वार दिखाई देता है– गुफा में प्रवेश के लिए मोमबत्ती जलानी होती है, गुफा से प्रतिमा तक जाने के लिए 25–30 फीट लम्बा पानी में चलना होता है। पानी करीब 2 फीट गहरा है।

कुदरत का नियम ऐसा कि प्रत्येक को अपनी जरूरत के अनुसार सुख मिल ही जाता है। जिसने जो 'टेन्डर' भरा है, वह पूरा होता ही है । ओर जो गलत है, वह तो हो ही नहीं सकता।।

पानी में चल कर आगे बढ़ते है तो सामने ही एक वेदी पर प्रगट प्रभावी श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 25'' ऊंची (करीबन) प्रतिमा बिराजित है। पाषाण की किस्म, बनावट के आधार पर प्रतिमा करीब 2500 वर्ष प्राचीन होने की सम्भावना की जाती है।

यहां पर कोई जैन बस्ती नहीं है और न ही कोई पुजारी रहता है, न कोई पूजा करता है लेकिन प्रतिदिन ताजा पुष्प चढ़ा हुआ मिलता है।

ऐसी मान्यता है कि विद्याधर देव रात्रि में भक्ति व पूजा कर पुष्प चढ़ातें है।

वर्तमान में दो ब्राह्मण झरोखे के पास दो वर्ष से रह रहे है, उनसे वार्ता की व पुष्प चढ़ाने की बात की भी जानकारी ली तो वे भी अनभिज्ञ थे और कहते है कि दो वर्ष में एक व्यक्ति के अतिरिक्त आप (मैं) आये है। पुष्प कौन चढ़ाता है, कहां से आता है उन्होंने किसी को नहीं देखा।

''108 पार्श्वनाथ'' नामक पुस्तक (लिखित श्री जगवल्लभसूरि) में ऐसा ही वर्णन है उसी के आधार पर मैं तीर्थस्थल पर गया और सत्यता पाई।

प्रतिमा के दाई ओर श्याम पाषाण की चतुर्विशंति स्थापित है और दाई ओर की दीवार के वहां एक वेदी पर स्वामी दत्रा की मूर्ति स्थापित है।

प्रतिमा के सामने की एक वेदी पर श्री पद्मावती देवी की श्वेत पाषाण की प्रतिमा स्थापित है। वेदी पर रिक्त स्थान होने से पहले दत्रा की मूर्ति स्थापित की, किसने कराई ज्ञात नहीं। अन्य रिक्त स्थान होने से कोरेगांव के जैन सदस्य ने पद्मावती देवी की प्रतिमा स्थापित कराई।

दोनों ही प्रतिमाएं कुछ वर्षों पूर्व ही स्थापित की गई।

श्री राजेन्द्र भाई शाह कोरेगांव से प्रायः प्रत्येक रविवार को दर्शन, पूजा के लिए आते है। तैयार केसर भी साथ में लाते है।

कोरेगांव में श्री मुनिसुव्रत भगवान का भव्य सुन्दर मंदिर है। दर्शन का लाभ लेना चाहिये।